कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट - 11
1 जुलाई 2020

आजीविका - आगे की राह

शहरों में आजीविका के सभी साधन समाप्त होने पर, देशव्यापी लॉकडाउन की शुरुआत में लाखों लोग घर वापस लौट गए, जिससे ग्रामीण क्षेत्र से शहरो की ओर पलायन का परिचित स्वरुप बाधित हो गया। जिन परशानियों और जिस अपमान का उन्हें सामना करना पड़ा वह हम सभी की सामूहिक स्मृति में बना रहेगा। लोगों की गरिमा पर केंद्रित, गूँज में हमने इस तथ्य का उपयोग स्थानीय आजीविका के लिए अपनी पहल 'वापसी' के साथ इन लोगों की गरिमा को बहाल करने के हमारे संकल्प को मजबूत और तेज करने के लिए किया है।

पहली बार 2008 में कोसी बाढ़ के बाद बिहार में शुरू हुआ और 2013 की उत्तराखंड बाढ़ के बाद व्यापक रूप से लागू किया गया, जम्मू-कश्मीर में 2014 की बाढ़ के बाद और हाल ही में केरल में 2018 बाढ़ के बाद, 'वापसी' ग्रामीण भारत में बड़े पैमाने पर जीविकोपार्जन का एक आजमाया हुआ और परखा हुआ तरीका है। यह स्थानीय लोगो को उनकी जानकारी और उपलब्ध संसाधनों के साथ स्वतंत्र और आत्मनिर्भर होने में सक्षम बनाता है।

क्षेत्र की जरूरतों के साथ उनके कौशल, ज्ञान और आकांक्षाओं का मिलान करते हुए, 'वापसी' लोगों को अपना जीवन बदलने से पहले उसे बेहतर बनाने का अवसर देता है। लेन-देन और व्यक्तिगत नेत्रत्व के बजाय यह लोगो को उनके समुदाय के लिए महत्वपूर्ण योगदानकर्ता भी बनाता है।

कोविद के दौरान हम पहले से ही सम्पूर्ण भारत में 'वापसी' पर कार्य शुरू कर चुके हैं। एक कदम और आगे बढ़ाते हुए, हमारा 'डिग्निटी फॉर वर्क' या DFW (श्रम सम्मान) दृष्टिकोण आजीविका की पहल में हमारे लिए रीढ़ की हड्डी का काम करता है, क्यूंकि पहुंच बढ़ने से अवसर भी बढ़ते हैं।

वर्तमान में, परियोजनाओं का निष्पादन स्थानीयकृत कृषि, पानी के मुद्दों, शिल्प आदि पर ध्यान देने के साथ शुरू हुआ है, और दक्षता सुनिश्चित करने के लिए परस्पर सहयोग स्थापित करने की सम्भावनाये देखी जा रही हैं। यह काम बड़े पैमाने पर होने जा रहा है और इसके लिए कई स्तरों पर संसाधनों और विशेषज्ञता की आवश्यकता होगी। यदि यह आपको किस भी प्रकार का जोश देता है: केवल प्रश्न पूछने तक का, या हमारे साथ जुड़ने का, या समर्थन व्यक्त करने का, तो कृपया हमें mail@goonj.org पर मेल करें।

सुरक्षित रहें... व्यस्त रहें...लगे रहें!!

अंशु गुप्ता

संस्थापक, गूँज

कार्यक्षेत्र की मुख्य गतिविधियां:

- 25 राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशो में काम शुरू हो गया है।
- 22 लाख किलो से अधिक राशन तथा अन्य जरुरी सामग्री पहुंचाई जा चुकी है।
- 1,20,000 किलो से अधिक सब्जियाँ तथा फल स्थानीय किसानो से खरीदा गया।
- स्वास्थ्य रक्षा संबंधी पहल: 5,00,000 फेस मास्क और कपड़े से बने सेनेटरी पैड बनाए गए।
- 1000 से अधिक डिग्निटी फॉर वर्क (DFW) कार्य की शुरुआत की गयी।

वापसी - गूँज द्वारा आजीविका पहल...

जब अपने आस पास देखने पर एक आपदा के विनाश के सिवा कुछ भो नज़र नहीं आता, तब 'सामान्य' जीवन में वापसी वास्तविकता से कोसों दूर लगती है। 'वापसी' पहल के माध्यम से, गूँज इस आशा का प्रयास करता है की वापस लौटना संभव है।

'वापसी' 5 प्रेरक सिद्धांतों पर आधारित है:

1. लोगो की जानकारी, संसाधनों, क्षमताओं और आकांक्षाओं का सम्मान।

2. ग्राम/ समुदाय की जरूरतों पर ध्यान देना। बाहरी निर्भरता कम करने के लिए समस्याओं का स्थानीय समाधान और संसाधन लागू करना।

3. ग्रामीण भारत को निर्माता, उपभोक्ता और खुद के लिए एक बाजार के रूप में देखना न कि शहरों के लिए केवल एक आपूर्तिकर्ता के रूप में।

4. इस बात का सम्मान करना की यदि हम कुछ समय के लिये लोगो का साथ दें तो वह आत्मनिर्भर बन सकते है।

5. गरिमा पर ध्यान देना, दान पर नहीं।

इसलिए, जब DFW (श्रम सम्मान) पहल के तहत, समुदाय को अपने गांव का तालाब साफ करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, तो यह न केवल उन्हें ताजे पानी का एक स्रोत सुनिश्चित करता है, बल्कि मछली पकड़ने और तालाब के इर्द-गिर्द उपजाऊ भूमि से वनस्पति उद्यान बनाने के लिए आजीविका उत्पन्न करने का एक क्षेत्र भी प्रदान करता है। साथ ही, स्थानीय सूझ-बूझ को शामिल कर, 'वापसी' समुदायों की आकांक्षाओं के प्रति सचेत रहने का प्रयास है - कृषि, पानी, कारीगरों और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को पुनर्जीवित करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए उन्हें अपने जीवन को दिशा देने का समान अवसर देता है।

वापसी: बिहार में व्यापक कार्य पर एक प्रेरक केस स्टडी (कोसी बाढ़ के बाद)

हमारे हस्तक्षेप से पहले भी बिहार में आय और आजीविका एक बड़ी समस्या थी, इसी ने हमें एक नए विचार के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया.. 'वापसी'। गूँज ने बाढ़ प्रभावित समुदायों की जरूरतों को समझने के लिए बड़े पैमाने पर एक सर्वे किया। एकत्र किए गए डेटा की मदद से हमने 35 पारंपरिक व्यवसायों का चयन किया जिसके लिए हमने कम निवेश वाले व्यावसायिक किट तैयार किए - मजदूरों के लिए, नाईयों के लिए, ढाबों से लेकर मनिहारियों या रिक्शा-खींचने वालों तक के लिए या सिलाई मशीनों के साथ. व्यावसायिक किट में नए सिरे से शुरुआत करने के लिए आवश्यक बुनियादी उपकरण, कपड़े और सामग्री शामिल थी।

प्राप्तकर्ताओं के लिए अद्वितीय पुनर्भुगतान विकल्प के रूप में उनके समुदाय के लिए श्रम दान (स्वैच्छिक श्रम) शामिल था। इस प्रकार, पुराने वस्तु विनिमय प्रणाली के सरल पुनरुद्धार के साथ, लोगों को अपनी आजीविका वापस मिली और उन्होंने अपने समुदाय को भी पुनः भुगतान किया। वापसी, जो अखिल भारतीय स्तर पर किया जा रहा है, लेकिन पूरी तरह से स्थानीयकृत है, एक नवीन समाधान निकला जो बेहतरीन प्रभाव उत्पन्न कर रहा है।

बिहार में बाढ़ के दौरान, गूँज 20,000 लोगों तक पहुंचा - खेती, कृषि क्षेत्र, कृषि श्रमिक से लेकर नाइयों, मोचियों, दर्जी की दुकानों और ढाबों को शुरू करने, चाय की दुकान, आमलेट की दुकान से लेकर सब्जी और किराने की दुकान के लिए विशिष्ट और अनुकूलित वापसी किट के माध्यम से सहयोग किया।

साझदारों के मुख से:

मुन्नी देवी ने वापसी पहल के तहत एक चाय की दुकान खोली। अब वह हर दिन लगभग 150 रुपये कमाती है और अपने बच्चों को स्कूल भी भेज पाती हैं। वह मुस्कराते हुए कहती है "अब मुझे लग रहा है कि मैं गाँव में आम नहीं हूँ, मेरी एक पहचान बन गयी है"।

खुर्शीद को वापसी के तहत एक सिलाई मशीन की पेशकश की गई थी। इस मूल उपकरण के साथ उन्होंने घर से अपना व्यवसाय शुरू किया और कुछ ही समय में उन्हें काम मिलना शुरू हो गया। उन्होंने अतिरिक्त समय (overtime) काम किया, नियमित रूप से समय सीमा के अंदर काम पूरा किया और जल्द ही वे पहले से अन्य स्थापित दर्जियो के लिए एक बेहतर प्रतियोगी बन गए। खुर्शीद कहते हैं, "अब मुझे काम मांगने के लिए इन लोगों का इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं है, मेरे पास इसका भरपूर इंतज़ाम है और हर दिन कुछ न कुछ मिलता रहता है।"

"बाबू कर्ज में डूबे जीवन में कोई राहत नहीं है," सौहाग्य ने उनके कृषि मजदूरी के सम्बन्ध में बात करने पर बताया। हालांकि, सुजनि बनाने के काम के कारण उनके जीवन में बदलाव आया है। होने वाली कमाई से उत्साहित होकर उन्होंने अपनी बहू को इसमें शामिल होने के लिए प्रेरित किया। अब, घर की दोनों महिलाओं ने अपने परिवार को कर्ज के जाल से मुक्त करने की शुरूआत कर दी है।

पिछले 4 वर्षों में कपड़े के आखिरी कतरनों का उपयोग करते हुए करीब सौ महिलाओं ने आजीविका के हिस्से के रूप में 5 लाख से अधिक सुजनि और आसन बनाए है। सुजनी का इस्तेमाल सर्दियों में रजाई के रूप में किया जाता है और गर्मियों में गद्दों के रूप में, और मोटे आसनों का इस्तेमाल बच्चों को स्कूलों में बैठने के लिए किया जाता है।

‘वापसी’ हाट

'वापसी' पहल का एक महत्वपूर्ण परिणाम है, हाट - एक स्थानीय बाजार। गूँज ने कई गॉवों में इन अस्थायी बाज़ार स्थानों को बनाने के लिए काम किया ताकि लोग अपने पास जो कुछ भी हो या जो उत्पादन हो उसे स्थानीय स्तर पर खरीद और बेच सकें। हाटों में नाई, मोची, मिठाई की दुकानों आदि को भी एक अच्छा व्यवसाय मिला है, और अन्य जिन्होंने गूँज से किट प्राप्त की, वह भी इन बाजारों में अपने माल को बेचने के लिए एक साथ आने लगे, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बड़ा बढ़ावा मिला।

कोविद के दौरान ‘वापसी’ पहल:

छत्तीसगढ़: छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले के गोबरसिंह गाँव में, राहत सामग्री पैक करने के लिए बार-बार बोरियाँ खरीदनी पड़ रही थी, ऐसे में हमारी टीम ने स्थानीय गांव समुदाय को राहत सामग्री की सुरक्षित पैकिंग के लिए कपडे के बैग बनाने के लिए प्रेरित किया। सिर्फ एक महिला के साथ शुरू हुई पहल और आगे बढ़ी जब दो और महिलाए कपडे के बैग की सिलाई के काम में

शामिल हो गयी। गाँव में ही आजीविका उत्पन्न करने के प्रयास के अलावा, इस्तेमाल किये गए कपड़े की थैलियों ने ग्रामीणों को इसकी उपयोगिता को एक नई निगाह से देखने का अवसर दिया।

पश्चिम बंगाल: बड़े कमरे के कोने में बैठे दर्जी अक्सर किसी इलाके के सबसे व्यस्त लोगों में से होते हैं। जब लॉक डाउन की शुरूआत हुई तो कोलकाता के इन दर्जियों की कमाई का साधन छूट गया। हालाँकि, मास्क की अचानक मांग बढ़ने के बाद, हमारी टीम के सदस्यों ने उन्हें मास्क बनाने के लिए प्रेरित करने का फैसला किया और उनके लिए कपड़े की व्यवस्था की गयी। इसी तरह दिल्ली में रेड लाइट एरिया और भारत भर में कई अन्य केंद्रों ने मास्क बनाना शुरू कर दिया। बीड, महाराष्ट्र में परिवारों के पलायन को रोकने के उद्देश्य से गूँज और हमारी सहभागी संस्थाए सामुदायिक खेती में वहां ग्रामीण समुदाय का सहयोग करेंगे।

उत्तर प्रदेश: बुंदेलखंड के लोग लम्बे समय से जल संकट से जूझ रहे हैं। इस लॉकडाउन के दौरान, हमारी टीम उप्र के ललितपुर जिले में दैनिक वेतनभोगी कृषि श्रमिकों, हथकरघा बुनकरों और पशुपालकों के साथ काम कर रही हैं, जिनके पास अभी काम नहीं है या जो अपनी उपज बेचने में असक्षम हैं। हमने उन्हें भुगतान के बदले टोकरियाँ बुनने और हाथ के पंखे बनाने के लिए प्रेरित किया। जल्द ही ग्रामीणों ने बुनाई शुरू कर दी और अब उनके पास पहले से ही हाथ के पंखे और टोकरी तैयार हैं तथा उन्होंने और तैयार करने का वादा किया है। इन्हें गूँज राहत किट में शामिल किया जाएगा।

राहत कोविद के दौरान आजीविका का काम

- 110 से अधिक व्यक्तियों को मास्क उत्पादन के माध्यम से आजीविका प्रदान की गयी।
- 490 किलोग्राम से अधिक बीज वितरण किया गया।
- 14,200 से अधिक सब्जियों के पौधे प्रदान किए गए।
- 1,000 से अधिक परिवारो तक पौधे / बीज के माध्यम से पहुंच।

आगे की राह...

वर्तमान में, आपदा के बाद पहल के रूप में गूंज ने 'वापसी' में 4 परिचालन रणनीतियों की रूपरेखा तैयार की है:

1. गांव समुदायों के बीच आवश्यकता मूल्यांकन अभ्यास में संलग्न रहना।

2. गांव स्तर के प्रचलित और आकांक्षी व्यवसायों का एक खाका पहचानना और बनाना।

3. छिपी हुई प्रतिभाओं को पहचानना और उनको पोषित करना।

4. व्यवसायिक किट प्रदान करना, या छोटे व्यवसाय स्थापित करना।

एक कदम आगे बढ़ते हुए, ग्राउंड टीम ने प्रत्येक क्षेत्र की क्षमता के अनुसार स्थानीय आजीविका के अवसरों की एक विस्तृत सूची विकसित की है। निष्पादन पर ये अवसर न केवल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने में मदद करेंगे, बल्कि बड़े पैमाने पर शहरों की तरफ होने वाले पलायन पर अंकुश भी लगाएंगे।

कार्य क्षेत्र से जानकारी:

राहत कोविद / अम्फान / निसर्ग / असम बाढ़

कोविड के समय में गूँज ने शहरों तथा गांवों में स्थापित अपने बहु-हितधारकों के तंत्र का उपयोग करते हुए 25 राज्यों में सबसे ज़्यादा प्रभावित परिवारों व नज़रंदाज़ किये गए समुदायों के लिए 22 लाख किलोग्राम राशन और राहत सामग्री स्थानीय तथा अनुकूलित तरीके से पहुंचाई है। वर्तमान में चल रहे कोविद राहत प्रयासों के अलावा, गूंज की स्थानीय टीमें तत्काल राहत प्रदान करने के लिए जमीनी स्तर पर कार्य कर रही हैं और दीर्घकालिक पुनर्वास की योजना भी बना रही है- अम्फान तूफान ने बंगाल तथा उड़ीसा को प्रभावित किया है, निसर्ग तूफान ने महाराष्ट्र को तथा बाढ़ ने असम को भी तबाह किया है। जिससे लाखों लोगों के जीवन प्रभावित हुए हैं, महामारी के तेजी से बदलते स्वरूप को देखते हुए गूंज अपनी रणनीतियों तथा योजनाओं की लगातार समीक्षा कर रहा है तथा उनमें नए बदलाव कर रहा है, हम अभी भी एक अभूतपूर्व आपदा का सामना कर रहे हैं साथ ही बारहमासी प्राकृतिक आपदाओं का सामना भी भारत को करना पड़ रहा है।

प्रभावित लोगो तक पहुंची तत्काल राहत सहायता

- 22 लाख किलो राशन तथा अन्य आवश्यक सामग्री, राशन किट 1,49,000 से अधिक परिवारों तक पहुंचाई गयी।
- 1,53,000 से अधिक तैयार भोजन लोगो तक पहुंचाया गया।

स्थानीय सामुदायिक रसोइयों को सहयोग

- 26 सामुदायिक रसोइयों के माध्यम से 1,86,000 से अधिक भोजन तैयार किया गया।

स्वास्थ्य रक्षा संबंधित पहल

- 3,90,000 फेस मास्क तथा 1,48,000 से अधिक कपडे से बने सेनेटरी पैड (माय पैड) तैयार किए गए।

NJPC प्रमुखताएँ

कुल 49 NJPC सत्र आयोजित किये गए, जिसमे कुल 1500 से अधिक महिलाओ की सहभागिता रही।

कुल डिग्निटी फॉर वर्क (DFW) की संख्या

- 1,000 से अधिक गतिविधिया कराई गयी।
- 500 से अधिक सब्जी बागान लगाए गए।
- जल संसाधनों का कुल क्षेत्रफल जिसे साफ़/मरम्मत/बनाया गया।
  1,12,000 sq m से अधिक तालाब क्षेत्र।
  29,000 sq m से अधिक रुके हुए पानी को खोलना।
  25,000 sq m से अधिक नहर।

अभावो को भरने के प्रयास तथा नेटवर्क की पहुँच को बढ़ाना

- 25 राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशो में 360 से अधिक सहभागी संस्थाओ के साथ कार्यो की शुरुआत।
- उद्योग जगत, संगठनों, तथा व्यक्तियों के साथ व्यापक स्तर पर काम।

राहत किट के लिए किसानो से सीधे तौर पर 1,20,000 किलो से अधिक फल और सब्जिया खरीदी गयी।

किट के माध्यम से 2,25,000 अन्य सामानो को जोड़ा गया।

राज्य तथा केंद्रशासित प्रदेश जहा हम वर्तमान में कार्यरत है।

आँध्रप्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, झारखण्ड, कर्नाटक, केरला, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, तेलंगाना, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, वेस्ट बंगाल।

अब, आवश्यकता केवल भोजन की नहीं है...

लाखों लोग अपने जीवन को फिर से स्थापित कर रहे हैं, सामान्य स्थिति में लौटने की कोशिश कर रहे हैं। उन्हें बुनियादी सामग्रीयों की आवश्यकता है, कपड़े, बर्तन, स्वच्छता उत्पादों, जूते, फर्नीचर, किताबें, स्टेशनरी, पर्दे या टाइल्स के प्रकार की वस्तुए... कुछ भी और सब कुछ मायने रखता है। गूंज द्वारा जो कुछ भी हमारे पास है या अभी जो कुछ प्राप्त हो रहा उसे आगे भेजा जा रहा है, लेकिन जरूरत ज्यादा बड़ी है। समय अन्य जरूरतों पर भी सोचने का है न सिर्फ खाद्यान्न पर।

- थोक रूप में सामग्री सहयोग- https://bit.ly/2yR000h
- राशि सहयोग के लिये- goonj.org/donate
- यदि आप गूँज के लिए फण्ड रेजिंग कैंपेन शुरू करना चाहते है तो कृपया हमे jibin@goonj.org पर मेल करे।

वेबिनार और चर्चाए:

1. गूँज फ़ेलोशिप: संभावनाओ के संसार की खोज- https://bit.ly/2Y07neG
2. कोविद का भारतीय संदर्भ में प्रदर्शनऔर हम क्या भूमिका निभा सकते हैं- https://bit.ly/36ZbBY4
3. गूँज की दृष्टि में क्या बेहतर है- https://bit.ly/36YXlyL
4. अम्फान चक्रवात के बाद के परिणाम- https://bit.ly/2XrMQAU

पिछली रिपोर्ट

- 18 मई- गरिमापूर्ण जीवन सबका अधिकार।
- 25 मई- जमीनी स्तर पर 8 प्रयोग।
- 1 जून- COVID महामारी के दौरान अम्फान चक्रवात का सामना।
- 8 जून- दान नहीं, सम्मान के साथ अग्रसर
- 15 जून - राहत अम्फान और राहत निसर्ग: COVID के समय में

रिपोर्ट पढ़ने के लिए- https://bit.ly/2K1JH3e

गूँज कार्यालय में नए दिशानिर्देशों के अनुसार पहले की ही भांति पुरानी/नई सामग्रियों को स्वीकार किया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए- www.goonj.org पर देखे।